डा रुचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, शिवाजी कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
ms.ruchira.gupta@gmail.com

प्रेमचंद जीवनदर्शन के विधायक तत्व

मनुष्य जीवन को अपनी दृष्टि से देखता और समझता है तथा तद्नुरुप अपने लिए कुछ नियम बनाता है । साहित्यकार भी अपने युग की परिस्थितियों से प्रभावित होता है । समान की समस्याओं , परंपराओं से ना केवल प्रभावित होता है अपितु अपने विवेक के माध्यम से समसामयिक कुरीतियों और समस्याओं को दूर करने का भी प्रयास करता है । इस तरह से जहां वह अपने समाज से प्रभावित होता है वही युग निर्माता भी बनता है। प्रेमचंद मानव जीवन को अत्यंत कोमल मानते थे । उनके अनुसार "जीवन सूत्र कितना कोमल है। वह क्या पुष्प से कोमल नहीं जो वायु के झोंके सहता है और मुरझाता नहीं ? क्या वह लताओं से कोमल नहीं जो कठोर वृक्षों के झोंके सहती और लिपटी रहती है?"[1] (रंगभूमि, परि.43,पृष्ठ 541,14वां संस्करण) उन्होंने माना कि यद्यपि जीवन सारहीन है तथापि उसका उद्देश्य कर्म है।"खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है।जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने का, लगन का"[2](प्रेरणा कहानी, परि.2,मानसरोवर भाग 4,पृष्ठ 10)

अमरकान्त उनके इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए कहता है "दादा आपके घर में मेरा इतना जीवन नष्ट हो गया, अब मैं उसे और नष्ट नहीं करना चाहता। आदमी का जीवन केवल जीने और मर जाने के लिए नहीं होता , ना धन संचय उसका उद्देश्य है। जिस दिशा में मैं हूं वह मेरे लिए असहनीय हो गई है । मैं एक नए जीवन का सूत्रपात करने जा रहा हूं , जहां मजदूरी लज्जा की वस्तु नहीं । जहां स्त्री पति को केवल नीचे नहीं घसीटती , उसे पतन की ओर नहीं ले जाती बल्कि उसके जीवन में आनंद और प्रकाश का संचार करती है । मैं रुढियो और मर्यादाओं का दास बनकर नहीं रहना चाहता । आपके घर में मुझे नित्य बाधाओं का सामना करना पड़ेगा और उसी संघर्ष में मेरा जीवन समाप्त हो जाएगा । " [3](कर्मभूमि , भाग 1 , परिशिष्ट 18 , पृष्ठ 137, चतुर्थ संस्करण) भोग विलास और वासना जन्य प्रेम को अनुचित मानते हुए प्रेमचंद मनुष्य को निस्वार्थ भाव से सेवा भाव मे प्रवृत्त होने की प्रेरणा देते हैं । उनके अनुसार सेवा मार्ग अत्यंत कठिन है क्योंकि इस पर त्याग और निस्वार्थ भाव से ही चला जा सकता है । वे देश सेवा को व्यक्तिगत जीवन में भी महत्वपूर्ण मानते हैं ।

जब कोई मनुष्य निष्काम भाव से सेवा कर्म करता है तभी उसे समाज कल्याण की भावना कह सकते हैं। कर्मभूमि मे अपने इसी आदर्श को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है " कोई काम सबाब समझकर नहीं करना चाहिए। दिल को ऐसा बनाओ कि काम मे उसे वहीं मजा आए , जो गाने या खेलने मे

आता है।कोई काम इसलिए करना कि उससे नजात मिलेगी रोजगार है।"[4](कर्मभूमि, भाग 5, परि. 6, पृष्ठ 354, चतुर्थ संस्करण) सेवा और त्याग के मार्ग पर चलते हुए अनेक प्रकार के लोभ अवरोध उत्पन्न करते हैं। अमरकांत भी कंचन और कामनी के कारण अपने मार्ग से कुछ समय के लिए भटक गया था किन्तु पुनः अपने विशिष्ट गुणों से अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। दृढता और लगन से व्यक्ति कोई भी काम कर पाता है। प्रेमचंद के अनुसार जीवन में स्वावलंबी होना भी ज़रूरी है । उनके सभी आदर्श पात्र सादा जीवन जीते हैं क्योंकि आडंबरपूर्ण जीवन यापन करने के लिए अधिक धन की आवश्यकता होती है जिसके लिए हमें कई बार अवांछित कार्य करने पड़ते हैं ।

प्रेम सभी मानवीय भावनाओं का मूल है क्योंकि दया , श्रद्धा, क्षमा , वात्सल्य, अनुराग, विराग , उपकार, सेवाभाव , राष्ट्रीय प्रेम सभी इस में अंतरभुक्त हैं किंतु यह प्रेम वासना हीन और स्वार्थ से कोसों दूर होना चाहिए क्योंकि जहां पर स्वार्थ है , भोग और लालसा है वहां और कुछ भी हो सकता है प्रेम नहीं। प्रेमचंद जीवन के प्राकृतिक रूप के समर्थक थे। कृत्रिम या बनावटी जीवन उन्हें स्वीकार्य नहीं था । अपने उपन्यासों में अपने पात्रों के माध्यम से अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं... " जीवन मेरे लिए आनंदमयी क्रीडा है, सरल,स्वच्छंद जहां ईष्या और जलन के लिए कोई स्थान नहीं। मै भूत की चिन्ता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता। मेरे लिए वर्तमान ही सबकुछ है।भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है।भूत का भार हमारी कमर तोड देता है।हम मे जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और क्षीण हो जाती है।"[5](गोदान,परि.18, पृष्ठ 295-96)

प्रेमचंद का मानना था कि व्यक्ति को समाज के परिप्रेक्ष्य मे देखना चाहिए अतः उनके सभी पात्र मात्र व्यक्ति न होकर अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इतना होने पर भी वे व्यक्ति के महत्व को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि "समाज व्यक्ति से ही बनता है और व्यक्ति को भूलकर हम किसी व्यवस्था पर विचार नहीं कर सकते।"[6] (गोदान ,परि.5, पृष्ठ 78)

प्रेमचंद की मान्यताएं ----प्रेमचंद के अनुसार " किसी चरित्र की रूपरेखा या किसी दृश्य को चित्रित करते समय हुलिया नबीसी करने की जरूरत नहीं। दो चार वाक्यों में मुख्य- मुख्य बातें कह देनी चाहिए।" [7] (साहित्य का उद्देश्य, पृष्ठ 66) उनका यह भी मानना था कि प्लॉट जितना सरल और सीधा होगा कहानी उतनी ही पाठकों को छू सकेगी। प्रेमचंद के पात्र सामान्य मेहनतकश , शोषित , पीड़ित किसान है जिन्हें जीवन की विषमताएं पराजित करती हैं, जो बार बार गिरकर पुनः उठने का साहस करते हैं। निरंतर दूसरों के साथ साथ स्वयं से भी संघर्ष करते हैं । अनेकानेक प्रलोभनों के मध्य ईमानदार रहते हैं । श्रम में विश्वास करते हैं और पीड़ित शोषित होने पर भी मानवीय धर्म को यथासंभव अपनाते हैं। उनकी बहुत चर्चित कहानी कफन , गरीब वंचित घीसू की पतोहू और उसके बेटे माधव की स्त्री बुधिया प्रसव पीड़ा से कराह कराहकर मर जाती है । यह कोई असाधारण बात नहीं है लेकिन उसकी कराह को सुन कर भी अनदेखा करने वाले और भुने हुए आलू खाते जाने से लेकर उसके मरने तक एवं गांव से उसके कफन के लिए इकट्ठा किए पैसों से पूरी बोतल शराब पी , जीवन में पहली बार मनचाहा खाना खा, नशे में डूबे बाप- बेटे का नाचना -गाना और फिर बेहोश होकर गिर जाना , निश्चित रूप से असामान्य है। यहां प्रेमचंद सामंती व्यवस्था का यथार्थ अंकन करना चाहते हैं जिसके तले हरिजन, मजदूरों के जीवन की परिस्थितियों व सच्चाई को देखा जा सकता है।प्रेमचंद सीधी सरल, सुबोध भाषा शैली के पक्षधर थे।

प्रेमचंद पूर्व मनोरंजन या उद्देश्य देने के लिए कहानियां लिखी जाती थी किंतु प्रेमचंद ने

उपन्यास और कहानी को सामान्य मानव जीवन से जोड़कर उसे व्यापक फलक प्रदान किया। " मनुष्य में जो कुछ सुंदर है , विशाल है , आदरणीय है आनंद प्रद है साहित्य उसी की मूर्ति है। उसकी गोद में उन्हें आश्रय मिलना चाहिए जो निराश्रय हैं , जो पतित हैं, जो अनाहत हैं।" [8] (मार्च 1932 , हंस , प्रेमचंद की उक्ति) तत्कालीन समाज में अनेकानेक सड़ी- गली रुढियां और परंपराएं फैली हुई थीं (पर्दाप्रथा, अशिक्षा, अनमेल विवाह) उन के कारण जनजीवन अस्त व्यस्त था। उनका मानना था " गल्प या कहानी पूरी गप्प नहीं होती ।उसका कोई ना कोई दार्शनिक अथवा सामाजिक आधार होता है । प्रेमचंद कला -कला के लिए सिद्धांत की तुलना में साहित्य का उद्देश्य ' देश सेवा ' को मानते हैं । उनके मतानुसार परतंत्र देश किसी भी दिशा में उन्नति नहीं कर सकता अतः उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज को बेडियों से मुक्त कराने का बीड़ा उठाया और साहित्य को समाज से जोडा। मात्र मनोरंजन के लिए लिखा गया साहित्य उनकी दृष्टि में कोई अर्थ नहीं रखता। सेवासदन ' उपन्यास में राष्ट्रवादी जमींदार कुंवर अनिरुद्ध सिंह से उन्होंने कहलवाया है " हममें से कोई भी दूसरों को गुलाम कहने का अधिकार नहीं रखता ।अंधों के नगर में कौन किसको अंधा कहेगा? हम अगर अपढ़, निर्धन, गवार हैं तो थोड़े गुलाम हैं। हम अपने राम का नाम लेते हैं, अपनी गाय पालते हैं और अपनी गंगा में नहाते हैं और हम यदि विद्वान, उन्नत , ऐश्वर्यावान हैं तो बहुत गुलाम हैं जो विदेशी भाषा बोलते हैं , कुत्ते पालते हैं और अपने देशवासियों को नीच समझते हैं । " [9] (सेवासदन, प्रेमचंद, पृष्ठ 170)

प्रेमचंद की कर्म भूमि उपन्यास का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवादः

a) **कन्नड़ः** 1.कर्म भूमि उपन्यास का अनुवाद गुरुनाथ जोशी ने 1950 में किया।

b) **गुजरातीः** 2. कर्मभूमि , का अनुवाद माणकलाल गोविंदलाल जोशी ने 1934, किया।

हिंदी सिनेमा के लोकप्रिय साहित्यकार

1 .सत्यजीत राय ने प्रेमचंद की कहानियों शतरंज के खिलाड़ी 1977 और सद्गति 1981 पर फिल्में बनाई।

2. सुब्रमण्यम ने 1938 में सेवा सदन उपन्यास पर फिल्म बनाई(जिसमें सुबह लक्ष्मी ने मुख्य भूमिका निभाई)

3 . मृणाल सेन ने 1977 में कफन कहानी पर आधारित ओका ऊरी कथा से तेलुगु भाषा में फिल्म का निर्माण किया।

4 . गोदान पर 1263 तथा गबन पर 1966 में फिल्में बनी

5 . निर्मला उपन्यास पर 1980 में धारावाहिक बना जो अत्यंत लोकप्रिय रहा

प्रेमचंद जीवन आरोपों से मुक्त नहीं था -- डां कमलकिशोर गोयनका ने अपनी पुस्तक प्रेमचंदः अध्ययन की न ई दिशाएं' में उनपर आरोप लगाए हैं।इन्हें मानव जीवन की दुर्बलताएं मानकर नज़र अंदाज किया जा सकता है ।

1.उन्होंने अपनी पहली पत्नी को अकारण त्याग दिया

2.अपने पुनःविवाह (शिवरानी देवी से) के उपरांत भी उनके अन्य महिला से संबंध रहे (शिवरानी देवी प्रेमचंद घर में ' पुस्तक में इस तथ्य को उद्घाटित किया है)

3. 'जागरण ' विवाद में विनोद शंकर व्यास के साथ धोखा किया ।

4 .अपनी प्रेस के वरिष्ठ कर्मचारी प्रवासी लाल वर्मा के साथ धोखाधड़ी की।

5. उनकी प्रेस के मजदूरों ने हड़ताल की।